
1.6 जैव-भूगोल का अन्य विज्ञानों से सम्बन्ध (Relation of Bio-Geography to other Sciences)

जैव-भूगोल का निश्चित रूप से ही जीवीय विज्ञानों (Biological Sciences) से गहरा सम्बन्ध है ।

वर्तमान में यह विशाल अथवा विस्तृत विषय का रूप ले चुका है । जैव-भूगोल, वनस्पति विज्ञान (Botany), जीव-विज्ञान (Zoology), भूगर्भ विज्ञान (Geology), जलवायु विज्ञान (Climatology), समुद्र विज्ञान (Oceanography), रसायन विज्ञान (Chemistry), Paleontology, Phyto Sociology, Palynology आदि से निकट रूप से सम्बन्धित है । जैव-भूगोल का मुख्य लक्ष्य उन भौगोलिक क्षेत्रों का अध्ययन करना है जहाँ कि वनस्पति व जीव जन्तुओं में समानता या असमानता पाई जाती है एवं जलवायुविक, धरातलीय एवं पर्यावरणीय कारकों का अध्ययन है जो इस विवरण को प्रभावित करते हैं । यह भू-विज्ञान (Geomorphology) का भी अध्ययन है जो यह बताता है कि भूतकाल एवं वर्तमान काल में प्राकृतिक वनस्पति का इतिहास कैसा था एवं वर्तमान काल में वह किस स्तर तक परिवर्तित हो चुका है ।

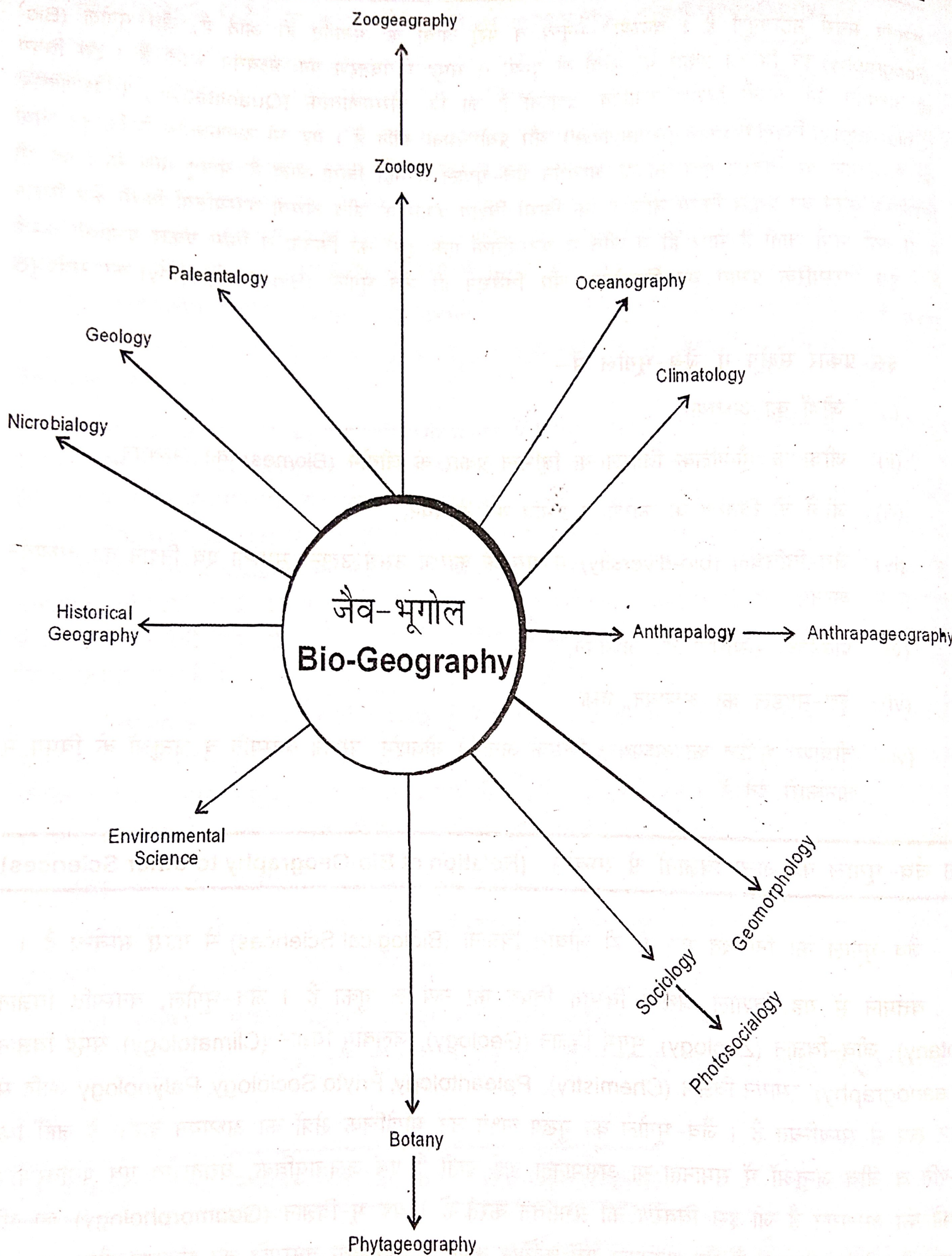


Fig. 1.0: BIO-GEOGRAPHY AND ITS RELATION TO OTHER SUBJECTS.

1.7 जैव-भूगोल का भारत में विकास (Development of Bio-geography in India)

भारत में जैव-भूगोल (Bio-Geography) का इतिहास बहुत पुराना नहीं है इसका विकास भी 20वीं शताब्दी में प्रारम्भ हुआ है ।

S. P. Agarkar ने 1929 में अपने शोध-पत्र 'Vegetation External Factor' में वनस्पति के विकास में पर्यावरण की भूमिका का अध्ययन किया है ।

H. G. Champion ने 1936 में अपने शोध पत्र 'Preliminary Syriang of India and Burma' में पहली बार वर्मा व भारत में पाए जाने वाले पेड़-पौधों का वर्गीकरण किया, इनके वर्गीकरण में पाए जाने वाले वनों को चार भागों में विभक्त किया:-

- (1) उष्ण कटिबन्धीय वन
- (2) उपोष्ण कटिबन्धीय वन
- (3) समशीतोष्ण कटिबन्धीय वन
- (4) अल्पाइन वनस्पति।

B. M. Sinha ने 1948 में उड़ीसा के वनों का अध्ययन किया ।

S. R. Vrar 1954 ई० में हिमाचल प्रदेश के वनों का वर्गीकरण पर्यावरण के आधार पर किया और पाया कि चीड़ का पेड़ 90-180 मी० की ऊँचाई तक पाए जाते हैं एवं मुख्यतः उन क्षेत्रों में पाए जाते हैं जहाँ मिट्टी में Micasist और Lime Stone पाए जाते हैं । देवदार के वृक्ष 1500-2400 मीटर की ऊँचाई तक पाए जाते हैं और ये उन क्षेत्रों में होते हैं जहाँ मिट्टी में Micasist, Silica, Granite पाए जाते हैं ।

S. R. Bakshi ने 1955 ई. में हिमालय प्रदेशों के वनों पर ऊँचाई के प्रभाव का अध्ययन किया ।

J. L. Luthara ने 1959 ई० में पेड़-पौधों को भौगोलिक अन्तर के आधार पर अलग-अलग वर्गों में बाँटा।

C. M. Mathur ने 1960 ई० में राजस्थान के वनों का अध्ययन किया ।

R. K. Aroda ने 1960 ई० में पश्चिमी घाट पर पाए जाने वाले वनों का अध्ययन किया ।

R. Gupta ने 1961 ई० में कश्मीर की डल झील में पाई जाने वाली वनस्पतियों का अध्ययन किया ।

R. P. Patel ने 1961 ई० में सुन्दर वन का अध्ययन किया ।

N. D. Rai ने 1961 ई में असम (Assam) राज्यों के वनों को दो भागों में विभाजित किया :-

(i) सदाबहार व अर्द्धसदाबहार वन

(ii) पतझड़ व अर्द्धपतझड़ वन ।

प्रथम प्रकार के वनों को दो उप भागों में विभाजित किया।

Jasveer Singh ने 1962 में पंजाब में हिमालय के वनों को दो भागों में बाँटा-

(i) कोणधारी वन । (ii) चौड़ी पत्ती वाले वन ।

R. P. Sharma ने 1965 ई० में राजस्थान के वनों का अध्ययन किया और बताया कि राजस्थान में मुख्यतः झाड़ी व सदाबहार घासें पाई जाती हैं और अरावली के निकट जहाँ रेत उपजाऊ व उत्पादक हो जाती

है तथा वर्षा भी होती है, बड़े-बड़े पेड़ पाए जाते हैं। अरावली पर्वत के ढाल पर पतझड़ वन भी पाए जाते हैं।

S. Puri ने 1966 ई० में अपनी पुस्तक 'Indian Forest Ecology' में भारत के वनों को 10 वनस्पति प्रदेशों में बाँटा :-

- | | | | |
|-----------------|--------------------|----------------------|------------------------|
| (i) प. हिमालय | (ii) पूर्वी हिमालय | (iii) असम | (iv) गंगा मैदान |
| (v) सिंधु मैदान | (vi) मध्य भारत | (vii) दक्षिण का पठार | (viii) मलाबार का प. तट |
| (ix) अण्डमान | (x) मिनीकोया | | |

C. R. Casnic ने द. के पठार के वनों का अध्ययन किया उनका अध्ययन क्षेत्र सतपुड़ा की पहाड़ियाँ थी। इन्होंने वहाँ के वनों को दो भागों में विभाजित किया:

- (i) मरुद्भिद (ii) शुष्क वन।

J. K. Maheshwari ने मध्य प्रदेश के वनों का अध्ययन किया।

1.8 जैव-भूगोल का महत्त्व (Importance of Bio-Geography)

जैसा कि हम लोग जैव-भूगोल की परिभाषा और इसका अन्य विज्ञानों से सम्बन्ध के बारे में जान चुके हैं। उसी आधार पर जैव-भूगोल का अपना एक विशिष्ट महत्त्व है जो जीवित तत्वों के स्थानिक वितरण के मध्य समानता और असमानता को दिखाता है। जो एक व्यवस्थित क्रमबद्ध रूप में होता है। जो हमारी पृथ्वी के लगभग सभी प्राकृतिक संसाधनों की लेखा-जोखा रखने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। इसी जैव-भूगोल में हम Microbial Ecology (सूक्ष्म-जीव पारिस्थितिकी) से Mammalian Ecology तक की जानकारी प्राप्त करते हैं।

इसी Bio-geography में शैवाल पारिस्थितिकी (Alge Ecology) से Forest Ecology वन पारिस्थितिकी तक की जानकारी से हमें अपने चारों ओर फैली विभिन्न प्रकार के पारिस्थितिकी तंत्र (Ecosystem) की जानकारी मिलती है। साथ ही मानव शिकार के कारण संकटापन्न (Endangered Species) व विलुप्त (Extinct) होते जा रहे जीव-जन्तुओं एवं पेड़-पौधों के पुनरुत्पादन करने हेतु प्रयास भी करती है। मानव के पर्यावरण के साथ सम्बन्ध विशेषकर मनुष्य के जीवमण्डल (Biosphere), पर प्रभावों तथा उनके मानव पर पड़ने वाले प्रति प्रभावों (Side effect) के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी देता है।

जहाँ तक जैव-भूगोल की महत्त्वता का प्रश्न है जो अपने आप में एक बहु-आयामी, शाखा है। जो पर्यावरण की गुणवत्ता, प्रदूषण एवं समस्याओं के वितरण एवं उनके निदान के उपायों की विवेचना भी करता है।